NAME GEETANJALI CHAUHAN

Roll no - SKT/1812

Paper code - 12133901

Paper name - ACTING AND SCRIPT WRITING

Date: / /

इसी प्रसंग में भरत ने नाट्यकार (नाट्यलेखक कवि) की भी चर्चा की है। नाट्य प्रयोग के लिए एक सन्निवंश, सभापति, मण्डी, सभासदो के लक्षणो का भी विवरण दिया है। इनमे प्रमुख प्रयोक्ताओ का स्वरूप स्पष्ट किया जा रहा है।

भरत → 'भृञ्' धातु से 'अत' प्रत्यय करके अथवा 'भर' उपसर्ग पूर्वक 'तन' धातु से प्रत्यय के योग से भरत शब्द व्युत्पन्न है। प्रथम व्युत्पत्ति का अर्थ है। "बिभर्ति स्वागम"। अर्थात जो स्वांग भरत है। लोक में इसे बहुरूपिया भी कहते है। दूसरी व्युत्पत्ति का अर्थ है। "बिभर्ति लोकान्"। अर्थात जो लोक का भरण पोषण करता है। नाट्य के परिप्रेक्ष्य में प्रथम व्युत्पत्ति भरतो के स्वरूप और कार्यो की परिचायक है। नाट्य प्रयोक्ताओ को यह नाम भरतमुनि द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुसरण करने कारण प्राप्त हुआ। नाट्यशास्त्रीय परम्परा में भरत शब्द एकवचन है। और बहुवचन दोनो रूपो में मिलते है।

प्रायः नाट्यशास्त्र भरत नामक किसी एक पंडित की रचना मानी जाती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भरत संस्कृत नाटो का मुख्य कार्य अभिनय करना है। इन्ही के नाम से भारतीवृति का प्रचलन हुआ है। ये हर प्रकार के वाद्य बजाने और हर प्रकार की भूमिका निभाने मे सक्षम होते है। और नाट्यसम्बन्धी समस्त विधी विधानो से पूर्ण परिचित होते है।

Page :
Date: / /

अभिनय के प्रकार :- अभिनय के सम्बन्ध में प्रयोक्तागण से अभिप्राय है। 'नाट्यमण्डली'। इसमें अभिनय करने वाले अभिनेताओं और अभिनय में सहायता करने वाले व्यक्तियों का समूह परिगणित है। नाट्य के लेखक से लेकर उसके मंच पर उतारने की प्रक्रिया में जिन जिन व्यक्तियों का सहयोग अपेक्षित है वे नाट्य के प्रयोक्ता है। सूत्रधार नट, नटी पारिपार्श्विक, विदूषक सहित नाट्य कर्म के उपयोगी पात्र इस वर्ग में सम्मिलित किये जाते है। शारदातनय के अनुसार नाट्य का प्रयोक्ता शैलूष भरत, भाव नट आदि नामो से पुकारा जाता है। भरत और नट, नटो का सम्बन्ध मूलतः मूकाभिनय से है, जिसमे आंगिक अभिनय का प्राचुर्य होता है। भरतो का सम्बन्ध वाणी के अभिनय से है अर्थात् वाणी के उतार चढ़ाव द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले वाचिक अभिनय से है।

(1) अभिनय क्रिया के आधार पर :- सूत्रधार, स्थापक, पारिपार्श्विक, भरत कुशीलव शैलूष नामकादि पात्र की भूमिका निभाने वाले नट, नटी नर्तक नर्तकी आदि।

(2) संगीतज्ञ :- गन्धर्व, किन्नर, तौरिद, नन्दी, बन्दी वैतालिक चारण मागध।

(3) ~~नाट्योपयोगी~~ नाट्योपयोगी उपादान सम्भारक → इसके दो वर्ग किये जा सकते है।

दूसरे उपवर्ग कारुक, मल्यकार, आभरणकार, मुकुटकार
पहले उपवर्ग में प्रशिक्षण, नाट्याचार्य उपाध्याय आदि।
नट-नटी :- भरतो के लिए सर्वाधिक प्रचलित संज्ञा नट है। इसका सामान्य अर्थ है। नाचने वाला या अभिनय करने वाला। 'नट' शब्द भ्वादिगणीय 'नट अवस्पन्दने' धातु से अच् प्रत्यय के प्रयोग से निर्मित है। जो लोक की घटित वृतान्त और जीवन की घटनाओं का रस भाव और सात्विक अभिनय की प्रधानता है। जो लोक की घटित वृतान्त और जीवन की घटनाओ का रस भाव और सात्विक भाव से संयुक्त करके मंचन करता है। वह 'नट' कहलाता है। नाट्य में रस की प्रधानता के कारण सात्विक अभिनय की प्रधानता होती है। नृत्य में पदार्थ की प्रधानता से प्रत्येक भाव शारीरिक अंगो की विविध मुद्राओ से ही प्रदर्शित किया जाता है। इसमें अंगिम अभिनय का प्राधान्य होता है। नट और नृत्य का प्रयोक्ता नर्तक कहलाता है।

नाट्य के प्रदर्शन के व्यवसाय से जुड़े या नाट्य को अपनी आजीविका का साधन बनाने वाले लोगो के समूह को नर संज्ञा उसी आधार पर है।

Page :
Date: / /

नटी :- भरत के अनुसार जो शरीररूप गुण, सौन्दर्य, सौभाग्य धैर्य व शील से सम्पन्न, कोमल, मधुर, स्निग्ध और आकर्षक कण्ठ स्वर से युक्त और भाव का अभिनय करने में समर्थ मृदु व्यवहार वाली, वाद्यो के वादन में कुशल, स्वर, ताल, लय और यति का समुचित बोध रखने वाली, वाद्यो के वादन में कुशल, स्वर, ताल, लय और यति का समुचित बोध रखने वाली नाट्याचार्य की सुश्रुषा करने वाली चतुर, नाट्यप्रयोग में कुशल ऊहापोह में समर्थ, रूप और यौवनशालिनी स्त्री नाटकिया कहलाती है। भरत का अभिप्राय यहाँ प्रधानभूमिका का निर्वाह करने वाली अभिनेत्री से है। इसे नाट्य में प्रधान भूमिका दी जाती है। उदाहरण - मालविकाग्निमितम् में मालविका की भूमिका का निर्वाह करने वाली नटी।

सूत्रधार के गुण :- संस्कृत नाट्यशास्त्र की परम्परा में सूत्रधार का स्थान सभी प्रयोक्ताओ में प्रमुख है। यह प्रयोग का प्राण बन कर पात्रो को जीवन और गति देता है। नाट्य के शास्त्रीय पक्ष को जानने के कारण इसे 'सूत्रज्ञ भी कहते है। सूत्रज्ञ का अभिनय - नट सूत्रो को जानने वाला।

Page :
Date: / /

सूत्रधार :- सूत्रधार, मेधावी, बुद्धिमानी, धैर्यवान् उदार अपनी बात का पक्का, कवि, ~~स्वास्थ~~ स्वस्थ, मृदुभाषी, समान व्यवहार करने वाला शान्त सदाचारी, प्रियवक्ता क्रोधरहित, सत्यभावी, पवित्र और प्राप्ति के अवसरो पर लोभ रहित होना चाहिए।

नाट्याचार्य :- भरतमुनि ने सूत्रधार को ही नाट्याचार्य कहा है। यह विद्वानो से प्राप्त शिक्षण और शास्त्र के सिद्धान्तो के आधार पर अपने ~~स्वम~~ से गीत, वाद्य, नृत्त तथा पाठ्य को अभिनेताओ से प्रयोग करता है। यह ज्ञान विज्ञान, कारण, ~~कथन~~ प्रयोग सिद्धि और शिष्यसिष्मादन की क्षमता से युक्त होता है।

स्थापक :- सूत्रधार के सहायको मे स्थापक का दायित्व सर्वाधिक उल्लेखनीय है। स्थापक (स्थान +णिच +पुक +ण्वुल) व्युत्पत्ति परक सामान्य अर्थ है। स्थापित करने वाला, नीव डालने वाला, कथा वस्तु को दृढ़ता से जमाने वाला।

पारिपार्श्विक :- परि उपसर्ग पूर्वक पार्श्व शब्द ~~से~~ स्वार्थ ठक् प्रत्यय और आदि अच् की वृद्धि करने पर पारिपार्श्विक शब्द बना है। इसका अर्थ है। समीप अथवा अगल - बगल मे रहने वाला सहायता के लिए सूत्रधार के समीप मे विशेष नट।

"परितः समन्तात् सूत्रधारस्य पार्श्वे चरतीति पारिपार्श्विकः"।

Page :
Date: / /

वस्तुत: यह सूत्रधार का सहयोगी नट। जो भरतो के द्वारा अभिनीत अनेक प्रकार के रसो पर आश्रित भावों का परिष्कार करता है। वह सूत्रधार के पार्श्वस्थ होने से पारिपार्श्विक कहलाता है। नान्दी के बाद दोनो पारिपार्श्विक उच्च स्वर से नान्दी की भावना के अनुसार स्तुति आदि पाठ का उच्चारण करे। उच्चारण विशेष के कारण इसे वादी भी कहते है।

विदूषक :- नाट्कीय कथानक में राजा या मुख्य नायक के शृंगार - सहायक नर्मसचिव के रूप मे। वह चाटुकारिता से भरी मीठी बाते बनाने में कुशल, प्रधान नायक का मुख्य सहयोगी और परिहास में ही नायक नायिका को मिलाने में मुख्य भूमिका निभाता है। अपनी भोजनप्रियता और हंसी उत्पन्न करने वाली से दर्शकों को मनोरंजन करता है।

विदूषक के रूप आकृती और चर्चा में भरत कहते है कि ठिगने कद का लम्बे दाँत वाला कलह, इधर-उधर बातो को लगाने वाला अनाकर्षक सूरत वाला, मंजा, पीली अथवा भूरी आँखो वाला व्यक्ति विदूषक होता है।

Page :
Date: / /

नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा ।
सूत्रधारेण सहिता: संलापं यत्र कुर्वते ॥
चित्रैर्वाक्यै: स्वकार्योत्थै: प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथ: ।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि सा ॥

कुशीलव :— भरत के अनुसार कुश और लव के द्वारा दातव्य विद्या को धारण करके अपनी आजीविका चलाने वाला समूह कुशीलव कहलाता है।

शारदातनय के अनुसार वाणी और अंगो की चेष्टाओं के द्वारा अनेक प्रकार की भूमिका की प्रकृती के अनुरूप अभिनय में कुशल होने के कारण कुशीलव संज्ञा का प्रयोग किया जाता है।

Harsha Kumari